aglasem.com

FOR MP CPCT EXAM PREPARATION

MP CPCT 2016 Question Paper · Hindi Typing

EXAM	YEAR	TYPE	SUBJECT	DATE
MP CPCT	2016	Question Paper	Hindi Typing	27 Mar 2016

SHIFT
Shift 1

Computer Proficiency Certification Test

Notations :

1.Options shown in green color and with ✔ icon are correct.

2.Options shown in red color and with ✖ icon are incorrect.

Question Paper Name:	inscript 27th March Shift 1
Subject Name:	Inscript
Creation Date:	2016-03-27 10:53:39
Duration:	25
Calculator:	None
Magnifying Glass Required?:	No
Ruler Required?:	No
Eraser Required?:	No
Scratch Pad Required?:	No
Rough Sketch/Notepad Required?:	No
Protractor Required?:	No

Mock

Group Number :	1
Group Id :	55813957
Group Maximum Duration :	10
Group Minimum Duration :	10
Revisit allowed for view? :	No
Revisit allowed for edit? :	No
Break time:	1
Mandatory Break time:	Yes
Group Marks:	0

Hindi Typing Test

Section Id :	55813969
Section Number :	1
Section type :	Typing Test
Mandatory or Optional:	Mandatory
Number of Questions:	1
Number of Questions to be attempted:	1
Section Marks:	0
Display Number Panel:	Yes
Group All Questions:	No

Sub-Section Number:	1
Sub-Section Id:	55813969
Question Shuffling Allowed :	No

Question Number : 1 Question Id : 558139282 Question Type : TYPING TEST Display Question Number : Yes

बहुत समय पहले की बात है हिमालय के जंगलो में एक बहुत ताकतवर शेर रहता था। एक दिन उसने बारासिंघ का शिकार किया और खाने के बाद अपनी गुफा को लौटने लगा. अभी उसने चलना शुरू ही किया था कि एक सियार उसके सामने दंडवत करता हुआ उसके गुणगान करने लगा।

Restricted/ Unrestricted: Unrestricted
Paragraph Display: Yes
Evaluation Mode: Non Standard
Keyboard Layout: Inscript

Actual

Group Number :	2
Group Id :	55813958
Group Maximum Duration :	15
Group Minimum Duration :	15
Revisit allowed for view? :	No
Revisit allowed for edit? :	No
Break time:	0
Mandatory Break time:	No
Group Marks:	0

Hindi Typing Test

Section Id :	55813970
Section Number :	1
Section type :	Typing Test
Mandatory or Optional:	Mandatory
Number of Questions:	1
Number of Questions to be attempted:	1
Section Marks:	0
Display Number Panel:	Yes
Group All Questions:	No

Sub-Section Number:	1
Sub-Section Id:	55813970
Question Shuffling Allowed :	No

Question Number : 2 Question Id : 558139283 Question Type : TYPING TEST Display Question Number : Yes

हिंदी का प्रश्न केवल लेखकों' और बुद्धिजीवियों का प्रश्न नहीं है, सामान्य जनता का प्रश्न है। विधेयक के विरोध में उठे आंदोलन का वास्तविक मूल्य और महत्व यही है कि वह 'लेखकों और बुद्धिजीवियों की बेचैनी' बन कर नहीं रह गया। सच्ची बात तो यह है कि आरंभ से ही उसका रूप एक व्यापक जन आंदोलन का ही रहा। जो लेखक और बुद्धिजीवी इसमें सक्रिय सहायक हुए वे भी लेखक और बुद्धिजीवी होने के कारण नहीं, बल्कि इस कारण कि हिंदी के आंदोलन को सामान्य हिंदीभाषी जनता का आंदोलन मान सकें, सबके साथ कंधे से कंधा मिला कर काम करने के लिए तैयार हो सकें, लेखक और बुद्धिजीवी होने के नाते अपने को एक विशिष्ट वर्ग के रूप में अलग रखने के मोह जाल से मुक्त हो सकें। प्रयाग के आंदोलन में जिस प्रकार मुक्त रूप से राजनीतिक कार्यकर्ता, लेखक, व्यवसायी, वकील, क्लर्क और अन्य अनेक वर्ग एक-दूसरे के सुर में सुर मिला कर हिंदी की बात कह सकें, अपने अनेक पारस्परिक मतभेदों को भुला कर और दबा कर जिस प्रकार हिंदी के प्रश्न पर एकमत हो सकें, वह सचमुच स्तुत्य है। जो प्रयाग में संभव हो सका वह निश्चय ही अन्यत्र भी हो सकता है और यदि हिंदी को अंग्रेजी का स्थान सचमुच लेना है तो ऐसा हो कर ही रहेगा। प्रयाग के 'हिंदी सप्ताह' की अवधि में हुई अनेक सभाओं और गोष्ठियों में से एक विशेष रूप से मशहूर है। सितंबर 12 को उत्तर प्रदेश के लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष श्री राधा-कृष्ण के सभापतित्व में एक महत्वपूर्ण विचार-गोष्ठी हुई जिसमें ज्ञान-विज्ञान के अनेक क्षेत्रों में हिंदी को माध्यम के रूप में अपनाने के प्रश्न पर अधिकारी विद्वानों ने अपने मत प्रकट किए । भाग लेने वालों में विश्वविद्यालय के भौतिक विज्ञान तथा राजनीति शास्त्र और स्थानीय इंजीनियरिंग तथा मेडिकल कालेजों के प्राध्यापक और उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता थे। इस बात पर सभी एकमत थे कि विज्ञान अथवा औद्योगिकी के किसी भी क्षेत्र में हिंदी को शिक्षा का माध्यम बनाने में ऐसी कोई भी दिक्कत नहीं है जो आसानी से दूर न की जा सके। सभी ने कहा कि पारिभाषिक शब्दों के समुचित पर्याय हिंदी में हों या न हों, हिंदी को वैज्ञानिक और औद्योगिक शिक्षा का माध्यम तुरंत बनाया जा सकता है - बशर्ते कि कोई सचमुच बनाना चाहे। लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष ने अपने विस्तृत अनुभव के आधार पर कहा कि "सारे प्रयत्नों के बावजूद देश में अंग्रेजी का स्तर बराबर गिरता जा रहा है, और गिरता ही जाएगा। हम जितनी जल्दी इस बात को समझ लें और मान लें कि आगे बढने के लिए हिंदी के सिवा कोई रास्ता नहीं है, उतना ही देश के लिए कल्याणकर होगा।" और शायद इन शब्दों से भी अधिक महत्वपूर्ण उनका यह कथन था कि "स्वतंत्रता के पहले अंग्रेजी पर जितना बल कभी नहीं दिया गया था, उसके प्रचार-प्रसार-उन्नयन की जितनी कोशिश कभी नहीं की गयी थी, उससे कहीं अधिक स्वतंत्रता के बाद से की जाने लगी है।" सबसे बडे हिंदी-भाषी प्रदेश के लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष के ये शब्द हैं - वो भी स्वतंत्रता-प्राप्ति के 17 वर्ष बाद और हिंदी को राजभाषा बनाने के संकल्प के 14 वर्ष बाद - और उधर, सुदूर नेपथ्य से आती हुई महात्मा गांधी की आवाज : "यदि मैं तानाशाह होता तो... "।

Restricted/ Unrestricted: Unrestricted
Paragraph Display: Yes
Evaluation Mode: Non Standard
Keyboard Layout: Inscript